॥ श्री हनुमान चालीसा॥

दोहा:
श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरू सुधारि
बरनऊँ रघुबर्ष विमल जसु जो दायकु फल चारि
बुढ़हीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि विद्या देह मोहि, हरदु कलेश विकार॥

चौपाई:
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर
जय कपीस तिहूँ लोक उजागर॥१॥

राम दूत अतुलित बल धामा
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥२॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी
कृमि निवार सुमति के संगी॥३॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा
कानन कुंडल कृंचित केसा॥४॥

हाथ बन्ध अरु धज्जा बिराजे
काँधे मूँझ जनेऊ साजे॥५॥
शंकर सुवन केसरी नंदन
तेज प्रताप महा जगवंदन॥६॥

विद्यावान गुणी अति चातुर
राम काज करिए को आतुर॥७॥

प्रभु चरित्र सुनिए को रसिया
राम लखन सीता मनबसिया॥८॥

सुखम रूप धरि सियहि दिखावा
विकट रूप धरि लंक जरावा॥९॥

भीम रूप धरि असुर सैंहारे
रामचंद्र के काज सवारे॥१०॥

लाय सजीवन लखन जियाए
श्री रघुबीर हरिष उर लाए॥११॥

रघुपति की न्हीं बहुत बढ़ाई
तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावै
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥१३॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा
नारद सारद सहित अहीसा॥१४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥१५॥

तुम उपकार सुप्रीवहि कीन्हा
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥१६॥

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना
लंकेश्वर भये सब जग जाना॥१७॥

जुग सहस्र जोजन पर भानु
लिप्यो ताहि मधुर फ़ल जानू॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही
जलधि लोधि गए अचरज नाही॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे
होत ना आज्ञा बिनु पैसारे॥२१॥
सब सुख लहें तुम्हारी सरना
तुम रक्षक काहु को डरना॥२२॥

आपन तेज सम्हारो आपे
तीनों लोक हाँक तै कापे॥२३॥

भूत पिशाच निकट नहीं आवे
महावीर जब नाम सुनावे॥२४॥

नासे रोग हे सब पीरा
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥२५॥

संकट तै हनुमान छड़ावै
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा
तिनके काज सकल तुम साजा॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै
सोई अमित जीवन फल पावै॥२८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा
हे परसिद्ध जगत उजियारा॥२९॥
साधु संत के तुम रखवारे
असुर निकंदन राम दुलारे॥३०॥

अष्ट सिद्धि नी निधि के दाता
अस बर दीन जानकी माता॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा
सदा रहो रघुपति के दासा॥३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै
जनम जनम के दुःख बिसरवै॥३३॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई
जहाँ जनम हरिभक्त कहाई॥३४॥

और देवता चित ना धरई
हनुमत सेई सर्व सुख करई॥३५॥

संकट कटै मिटे सब पीरा
जो सुरिरे हनुमत बलबीरा॥३६॥

जै जै हनुमान गुसाईः
कृपा करहु गृहु देव की नाई॥३७॥
जो सत बार पाठ कर कोई
छूटहि बंदि महा सुख होई॥३८॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा
होय सिद्ध साखी गौरीसा॥३९॥

tulsi das sadu hari che a
कीजे नाथ ह्रदय मह डेरा॥४०॥

दोहा:

dhanu tath संकट हरन, मंगल मूरित रूप।
राम लखन सीता सहित, ह्रदय बसहु सुर भूप॥